१. चित्र

१. चित्र–शिल्प
२. संगीत (गायन, वादन एवं नृत्य)
३. नाट्य

१. चित्र

- हमारे चारों ओर रंग बिरंगे फूल, पत्ते, वृक्ष एवं पक्षी होते हैं । आओ उनकी पहचान कर लें ।

  विविध आकार, रंग ध्यान में रहें इसके लिए आओ वे आकार कागज पर उतारकर देखें । इस कार्य के लिए रंगीन खड़िया, रंगीन पेंसिलें एवं रंगों का उपयोग किया जा सकेगा ।
- विविध रेखाएँ, अलग–अलग आकार बनाएँगे । याद कर–करके चित्र बनाएँगे । पसंद के अनुसार चित्र बनाएँगे और रेखा एवं आकार की सहायता से कलाकृति बनाएँगे । आओ, अक्षर सुंदर होने के लिए रेखाओं और आकारों का अभ्यास कर लें ।

रेखांकन

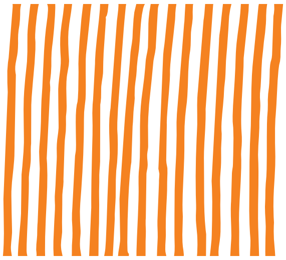

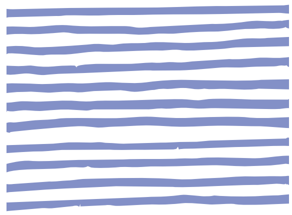

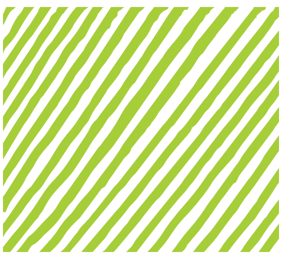

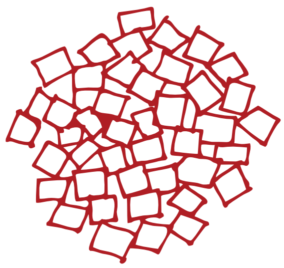

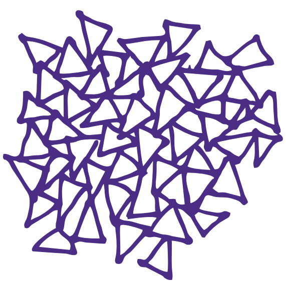

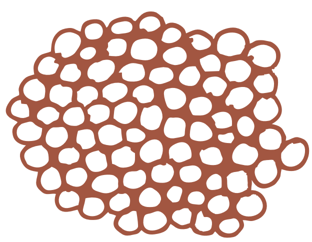

रेखांकन अर्थात चित्र बनाना ।

रेखा

खड़ी रेखा, आड़ी रेखा
आओ रेखा खींचे ।
आओ उन रेखाओं से अलग-अलग
आकार बनाएँ ।।

हम अच्छे-अच्छे चित्र बनाएँ ऐसा हमें प्रतीत होता है ना ! तो आओ पहले रेखा खींचना सीखें । जब दूसरी कक्षा में थे तभी हमने रेखा खींचना सीख लिया था । अब उसका अधिक अभ्यास करें । रेखा अच्छी खीचेंगे तो अच्छे चित्र बनाने आएँगे ।

मेरी कृति

उपरोक्त के अनुसार विविध रेखाएँ खींचो और आकार बनाओ ।

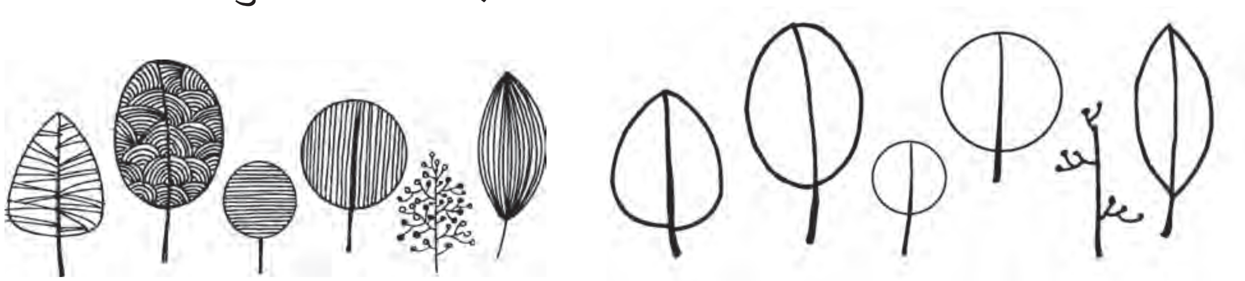

- पसंद के अनुसार रेखाएँ एवं आकार बनाने के लिए कहें । रेखाओं के अभ्यास के लिए पेंसिल, स्केचपेन, मार्कर पेन, रंगीन खड़ियाँ, रंगीन पेंसिलों का उपयोग किया जा सकेगा ।

आकार

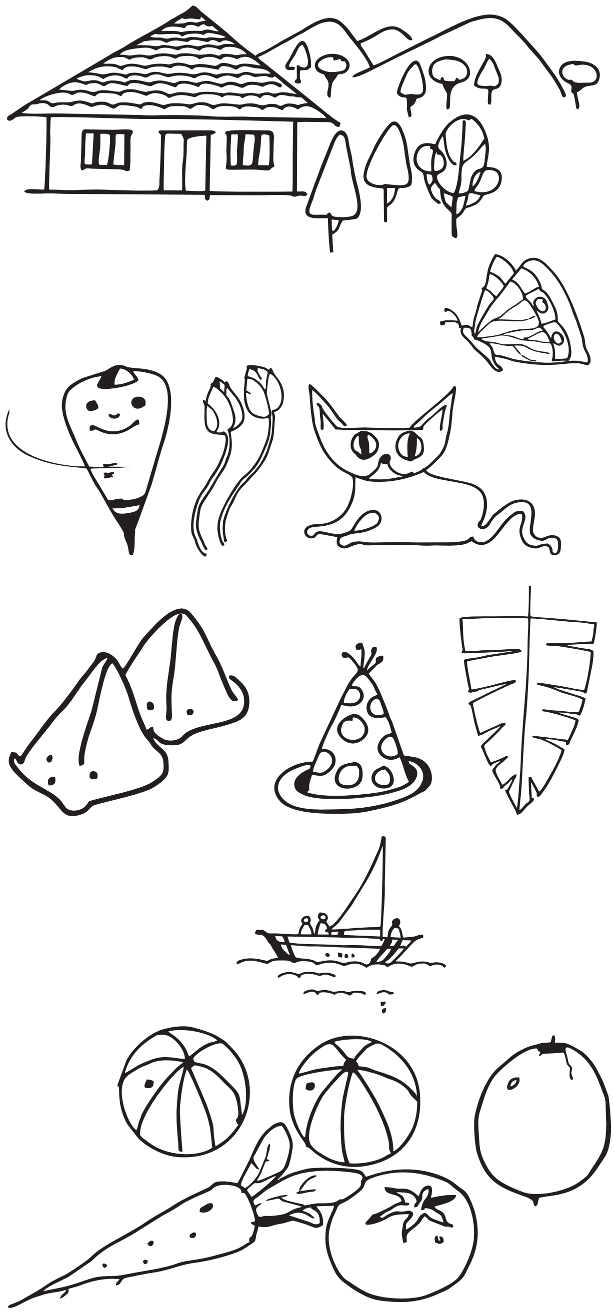

रेखाओं से बनते हैं आकार, आओ हम त्रिकोण, चौकोन एवं गोल आकार बनाएँ।

एक रेखा सरल
दो रेखाएँ तिरछी
तब बनता है कौन?
हाँ मैं ही हूँ वह त्रिकोण
पत्तों का आकार त्रिकोणीय
बोलो तो और कितनी
वस्तुओं में छिपा है यह आकार त्रिकोणीय ?

आधी–आधी दो कटोरियाँ
जोड़ के बनता है कौन
हाँ मैं ही हूँ वह गोल
गेंद का आकार गोल
नीबू का आकार गोल
बोलो तो और कितनी
वस्तुओं में छिपा है आकार गोल?

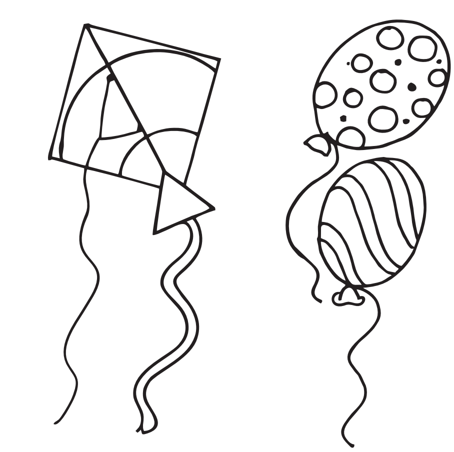

दो रेखाएँ खड़ी
दो रेखाएँ आड़ी
तब बनता है कौन?
हाँ मैं ही हूँ वह चौकोन
रूमाल भी चौकौन
घर का टीवी भी चौकोन
बोलो तो और
कितनी वस्तुओं में छिपा है आकार चौकोन?

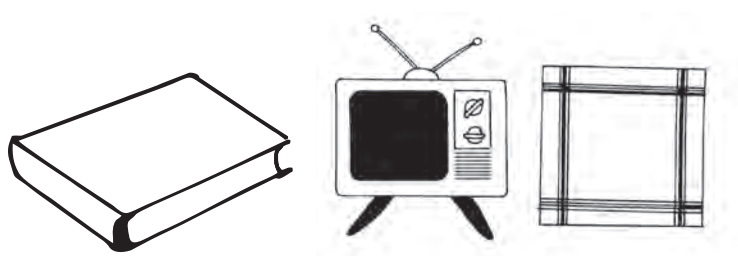

स्मरण चित्र

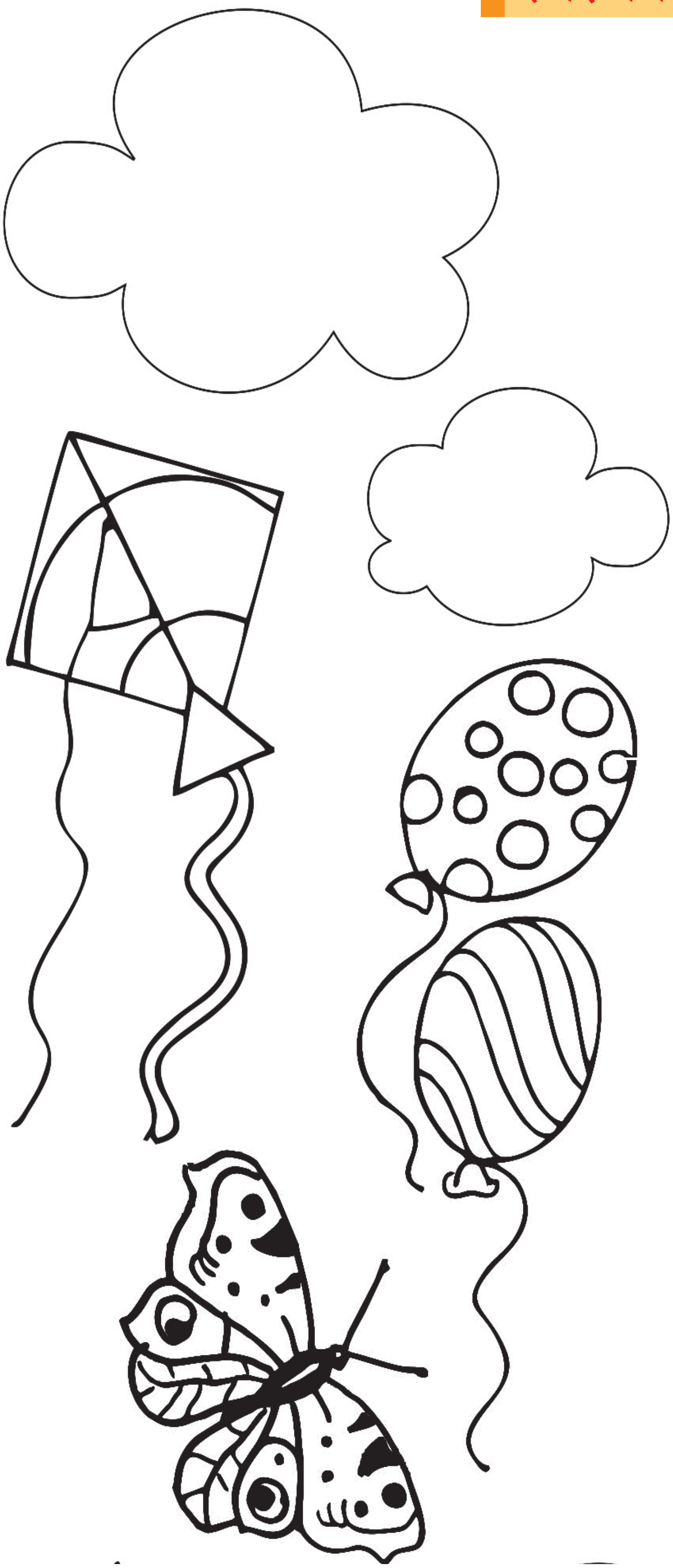

आओ याद करके बनाएँ

वृक्ष, सूर्य, घर, रेलगाड़ी, तितली, पतंग, बादल या पक्षी–प्राणी आदि ।

आओ ध्यान में रखें

१. हमें अच्छे चित्र बनाने आएँगे ।
२. अपना चित्र गलत है ऐसा ना समझें ।
३. चित्र स्वयं उसका अपना होता है ।
४. चित्र बनाते समय बहुत आनंद आएगा ।

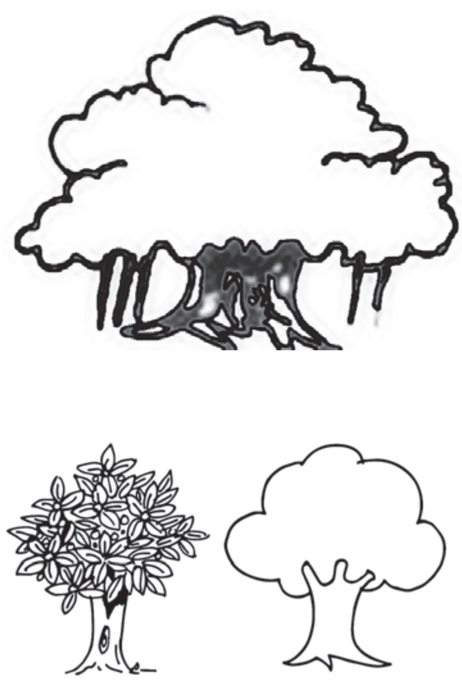

◆ स्मरण करते हुए पसंद के अनुसार विद्‌यार्थियों से अलग चित्र बनाने के लिए कहें । बच्चे देखकर चित्र न बनाएँ इसका ध्यान रखें । चित्र में गलतियाँ न निकालें कारण वे चित्र उनके स्वयं के होते हैं । चित्र की भावना को देखें ।

कल्पना चित्र

आओ ! अपनी कल्पना से कोई भी चित्र बनाएँ ! मेरी गुड़िया, परी रानी, चॉकलेट का बंगला, इंद्रधनुष, मेरे जन्मदिन का केक आदि ।

* चित्र देखकर तो सभी चित्र बनाते हैं । चित्र मन से बनाना कभी भी उत्तम होता है ।
* आओ अपने मन से औरों की अपेक्षा कागज पर अलग चित्र बनाएँ ।
* चित्र गलत है ऐसा ना समझें ।
* स्वनिर्मिति का अपना अलग ही आनंद होता है ।

मेरी कृति

कल्पना से कोई भी चित्र बनाओ ।

- कल्पना से इससे भी अलग चित्र बनाने के लिए कहें । कल्पना से क्या तात्पर्य है यह समझाकर बताएँ । कल्पना से तात्पर्य है स्वयं का अपना एक अलग चित्र ।
- चित्र में गलतियाँ न निकालें कारण वे चित्र उनके स्वयं के बनाए होते हैं । चित्र की भावना को समझें । बच्चों की सराहना करें ।

कलाकृति (डिजाइन)

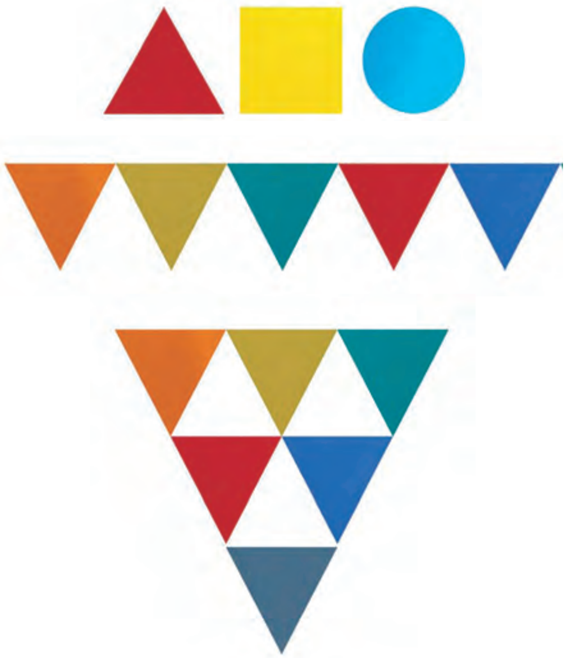

सई : ऋचा तेरे फ्रॉक की कलाकृति कितनी सुंदर है न !

ऋचा : हाँ रे ! मेरी दीदी का चयन है ।

सई : कितनी सुंदर ! इसमें कितने अलग-अलग और सरल आकार हैं ।

दीदी : क्या बात है सई ! कैसी चर्चा चल रही है ।

ऋचा : हम मेरे फ्रॉक की कलाकृति देख रहे थे ।

दीदी : कलाकृति कैसे तैयार की जाती है वह मैं तुम्हें बताती हूँ । वह बड़ा मजेदार होता है ।

ऋचा : कैसा मजेदार दीदी !

दीदी : रूमाल, कपड़े, साड़ी इसकी कलाकृति हम हमेशा देखते हैं । उसके पत्ते, फूल, विविध आकार एवं रंग देखते हैं । तो बस आओ ! ऐसी ही आसान कलाकृति बनाना हम सीखें ।

सई : चलेगा, इसके लिए क्या-क्या सामान लगेगा ?

दीदी : रंगीन कागज, पेंसिल, स्केल पट्टी, कैंची आदि ।

ऋचा : यह सारा सामान तो मेरे पास है । तो चलो शुरू करें ।

दीदी : रंगीन कागज पर त्रिकोण का एक आकार बनाकर कैंची से काटें । ऐसे एक समान अलग-अलग रंगों के पाँच से छह त्रिकोण काट लो । आओ तैयार त्रिकोणों को हम अलग-अलग प्रकार से रखकर देखते हैं ।

सुनिल : दीदी हम तेरी सहायता करते हैं । मैं कुछ त्रिकोण लगाकर देखता हूँ ।

ऋचा : अरे वाह ! बढ़िया ।

सई : आओ विविध प्रकार से हम त्रिकोण रखकर देखते हैं ।

दीदी : देखो कितना सुंदर दिखाई दे रहा है । इसी को कलाकृति कहते हैं ।

ऋचा : बहुत सुंदर कलाकृति !

दीदी : त्रिकोण की तरह हमें गोल, चौकोन जैसे आकार लेकर भी कलाकृति का काम करना है ।

सई : दीदी बहुत मजा आया । कलाकृति कैसे तैयार की जाती है यह भी समझ में आ गया ।

ऋचा : कल हम अपनी कक्षा के सभी को कलाकृति के मजेदार काम दिखाएँगे ।

दीदी : हमने जो सीखा है उसे औरों को भी सिखाना यह अच्छा विचार है ।

मेरी कृति

विविध आकारों से कलाकृति बनाओ ।

- चित्रों में बताए अनुसार अथवा उससे अलग आकार तैयार करके विविध कलाकृति बनवा लीजिए ।
- जहाँ आवश्यक हो वहीं सहायता करें । गोल आकृति बनाने के लिए चूड़ी, पेन का ढक्कन, कटोरी जैसी किसी गोल सामग्री का उपयोग करें ।

रंगों की पहचान

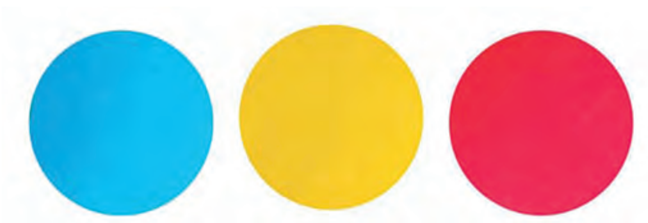

प्रकृति हमारे लिए विविध रंगों से सजी हुई है । इनमें पत्ते, फूल, वृक्ष, पक्षी, पहाड़, आकाश, बादल, तितलियाँ इनके अनेक रंग हमें देखने को मिलते हैं। उनका निरीक्षण करेंगे तो ही ये रंग देखने को मिलेंगे।

रंगीन कागजों से तीन विविध रंगों के एक जैसे गोल आकार काट लो। तीनों गोल कागजों को एक साथ पकड़कर किनारे से मध्य तक काट लो। ये काटे हुए गोल एक-दूसरे में फँसाकर एवं घुमाकर देखें कितना मजा आता है । करके तो देखो !

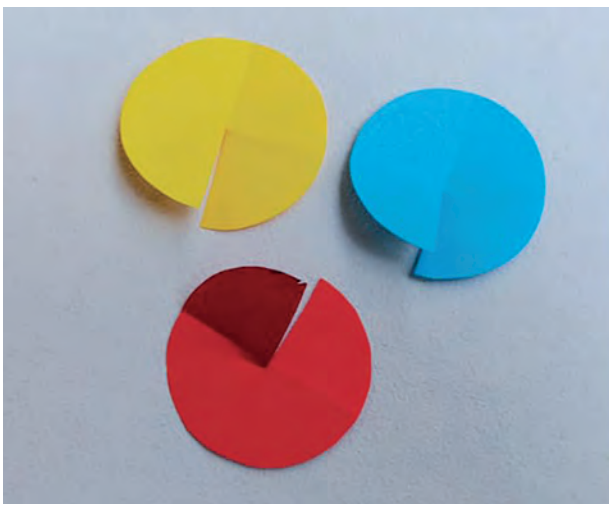

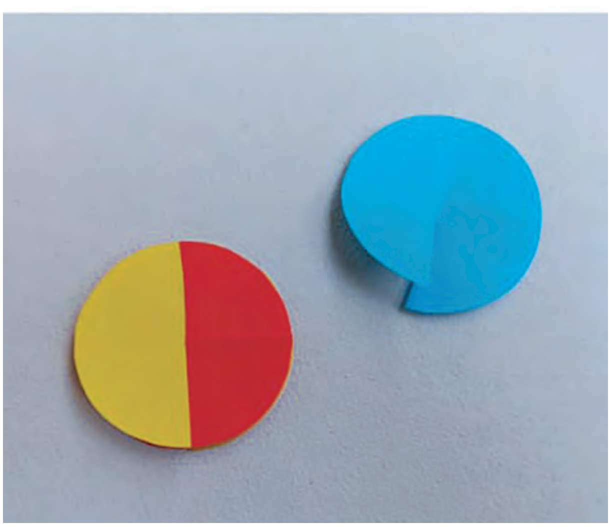

प्रकृति में विविध रंग होते हैं उसी तरह कपड़े, वस्तु, खिलौनों के भी विविध रंग होते हैं। चित्र में कुछ गुब्बारे दिए गए हैं। उनके रंग देखो और पहचानो जो तुम्हें मालूम हैं, ऐसे रंगों की सूची बनाओ।

◆ प्रकृति में विविध रंग होते हैं। उसी तरह कपड़े, वस्तु, खिलौनों के भी विविध रंग होते हैं। चित्र में कुछ गुब्बारे दिए गए हैं। उनके रंग देखकर पहचानने के लिए कहें।

ठप्पा कार्य

चलो ठप्पा कार्य करें ।

इरा : रवि ! अरे ये देख मेरे हाथ का रंग दीवार पर लग गया ।

रवि : हाँ ! इसी को तो ठप्पा कहते हैं ।

इरा : अरे हाँ ! और किसी के भी ठप्पे अंकित किए जा सकते हैं ।

रवि : बिलकुल सही । लेकिन हमें जलरंग चाहिए ।

माधव : मुझे भैया ने जन्मदिन के उपहार के रूप में जलरंग का सेट और ब्रश दिया है ।

रवि : मैं बताता हूँ वैसा करो ! एक कागज पर रंग लगाओ । कौन लगाएगा ?

इरा : मैं लगाती हूँ । मुझे ब्रश से रंग देना अच्छे से आता है ।

माधव : रंग देने के बाद क्या करना है ?

रवि : वह रंग सूखने से पहले, माधव तू कागज को मरोड़ । लेकिन रंग गीला ही रहना चाहिए और मरोड़ते समय रंग भीतर ही रहना चाहिए ।

इरा : चलो अब खोलो देखें !

रवि : थोड़ा ठहर तुरंत नहीं खोलते, दस मिनट बाद खोलेंगे ।

माधव : वाह !... कितना सुंदर चित्र बना गया है ।

इरा : हम और भी अलग-अलग चित्र बना सकते हैं ।

दादा : अरे वाह ! बहुत ही सुंदर किया है तुमने... इस कार्य को ही 'ठप्पा कार्य' कहते हैं ।

बच्चे : ऐसा क्या ! यही ठप्पा कार्य है ।

भैया : इसका उपयोग तुम डिजाइन कार्य में कर सकोगे ।

(सारे बच्चे इसका उपयोग डिजाइन कार्य में कहाँ-कहाँ किया जा सकेगा इस विचार में खो गए ।)

थोड़ा खेल

अरे वाह ! कितने सुंदर हैं पेन के ये ढक्कन ! रमा को इसका कोई उपयोग होगा क्या ? अरे हाँ, रमा की पाठशाला में ठप्पा कार्य का एक प्रकल्प दिया है ! उसके लिए इन ढक्कनों का उपयोग किया जा सकेगा । हाँ सच है, रमा से यह करवाएँगे ही । रमा बहुत खुश होगी । इसके लिए सामग्री क्या लगेगी भला ! जलरंग, ब्रश, पानी, कागज और ये ढक्कन, कागज सफेद या रंगीन चलेगा । पेन के प्रत्येक ढक्कन की कोर में ब्रश से रंग लगाकर कागज पर ठप्पे अंकित कर तथा अलग-अलग आकार की अन्य वस्तुओं (उदा. पत्ते, प्याज, भिंडी, धागा आदि) का भी उपयोग करने पर कितनी सुंदर डिजाइन बनेगी । रमा तो खुश होकर उछल जाएगी । इस ठप्पे कार्य का उपयोग डिजाइन के लिए कहाँ-कहाँ होगा इस विचार से तो रमा बिलकुल खो ही जाएगी । उसके उत्कृष्ट ठप्पा चित्र बनेंगे । उसे ऐसे अनेक चित्र बनाने आएँगे । रमा को अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के विविध चित्र आज देखने को मिलेंगे । यह ठप्पा कार्य करते हुए खूब आनंद आएगा ।

- अलग-अलग वस्तुओं के विविध रंगों के ठप्पे लगाने के लिए कहें ।

पैबंद चित्र

साक्षी : अरे ! सर बोल रहे थे कि आज पैबंद चित्र बनाना है ।

राजेश्वरी : पैबंद चित्र का मतलब ?

साक्षी : मुझे भी नहीं समझा ।

पूजा : मुझे मालूम है । मैं बताती हूँ, हम चित्र बनाते हैं और उसे रँगते भी हैं । मुझे बताओ कि रँगते समय किस का उपयोग करते हैं ?

राजेश्वरी : रंगीन खड़िया, स्केच पेन, रंगीन पेंसिल ।

साक्षी : जलरंग का भी उपयोग करते हैं ।

पूजा : हमारे पास रंग न हों तो ! कैसे रँगेंगे ?

अजय : हाँ सच में ।

पूजा : रँग सकेंगे मित्रो, जो चाहिए उस रंग का रंगीन कागज ढूँढ़कर फाड़ें अथवा काटें फिर जहाँ चाहिए वहाँ उचित स्थान पर उसे गोंद से चिपका दें तो चित्र रंगीन दिखेगा न !

राजेश्वरी : हाँ सही है ! यह हमें मालूम ही नहीं था । फिर पैबंद चित्र बनाकर देखें क्या ?

पूजा : हाँ ! और पैबंद चित्र को ही 'कोलाज' कहते हैं भला !

साक्षी : मेरे पास हैं रंगीन कागज, पर हम कौन–कौन से चित्र बना सकते हैं ?

पूजा : तुम्हें जो सहज बनाने आएँ ऐसे अपनी पसंद के अनुसार चित्र बना सकते हो । उदा. बादल, वृक्ष, पतंग, गुब्बारा, तितली, चंद्र, सूर्य, घर, फल सब्जियाँ आदि ।

राजेश्वरी : हम कोई भी चित्र रँग सकते हैं ।

साक्षी : इसके लिए नए रंगीन कागज ही लगेंगे क्या ?

पूजा : ऐसा कुछ नहीं ! रद्‌दी की मासिक पत्रिकाओं अथवा समाचार पत्रों में आने वाले रंगीन विज्ञापन, सूचना पत्रिकाओं का भी हम उपयोग कर सकते हैं ।

राजेश्वरी : अर्थात सस्ते में मजेदार !

अजय : चलो फिर... हर कोई अपना अलग–अलग पैबंद चित्र बनाएँ ।

साक्षी : मैं तो सबकी अपेक्षा अलग ही चित्र बनाऊँगी !

मेरी कृति

विभिन्न आकारों के पैबंद चित्र बनाकर चिपकाओ ।

◆ उपरोक्त संवाद विद्‌यार्थियों को समझाएँ तथा उनकी पसंद के अनुसार पैबंद चित्र बनवाइएँ । आसान आकार बनाते हुए रंगीन कागज के टुकड़ों से पैबंद चित्र (कोलाज) बनवाइएँ ।

सुलेखन

तुम अच्छे दिखो, तुम्हें ऐसा लगता है न? सुंदर कपड़े, जूते, बस्ता इन्हीं की तरह तुम्हारे अक्षर भी अच्छे होने चाहिए।

आओ हम यह सीखें।

- सुलेखन अर्थात सुंदर अक्षर।
- सुंदर अक्षर लिखने के लिए अच्छी रेखा और अच्छे आकार बनाने आना चाहिए।
- रेखा तथा अक्षर लिखते समय साफ–सुथरापन होना चाहिए।

पहले पेंसिल से, आड़ी सरल रेखा स्केल पट्टी की सहायता से खींचेंगे। उसके बाद स्केल पट्टी का उपयोग किए बिना हाथ से ही पेंसिल द्वारा खींची गई रेखा पर स्केच पेन फिराओ। ऊपर के अनुसार खड़ी सरल रेखा और तिरछी रेखा बनाओ। इस रेखा का अधिकाधिक अभ्यास करो जिससे रेखा सुंदर बनेगी और अक्षर भी सुंदर होंगे।

◆ अक्षर सुंदर लिखना आने के लिए बचपन से ही अभ्यास आवश्यक है। ऊपर के अनुसार कुछ रेखाओं का व्यवस्थित अभ्यास करवाएँ।

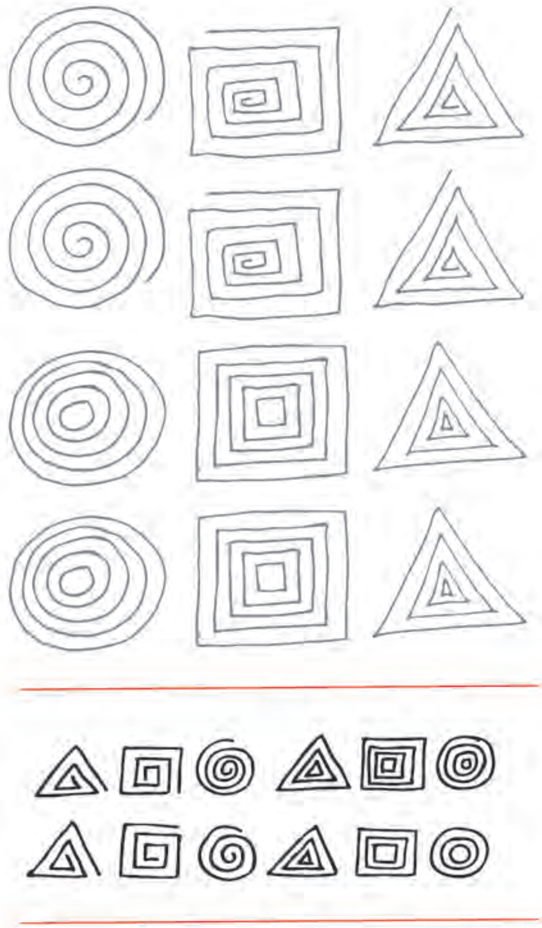

- कुछ आकार दिए हैं। इन आकारों पर हाथ से ही स्केच पेन फिराओ।
- ऐसे आकार तुम भी बनाने का प्रयत्न करो।
- आकार बनाने के लिए आलेख कागज का उपयोग करो।

अक्षर अच्छे आने के लिए ध्यान में रखो।

१. अधिकाधिक अभ्यास करके हाथ को उचित घुमाव दो।

२. अक्षर सुंदर लिखने के लिए रेखाओं का तथा आकारों का व्यवस्थित अभ्यास करो।

३. अच्छी नोकवाली पेंसिल का उपयोग करो।

४. अक्षरों का अभ्यास दोहरी रेखा की कापी में करो।

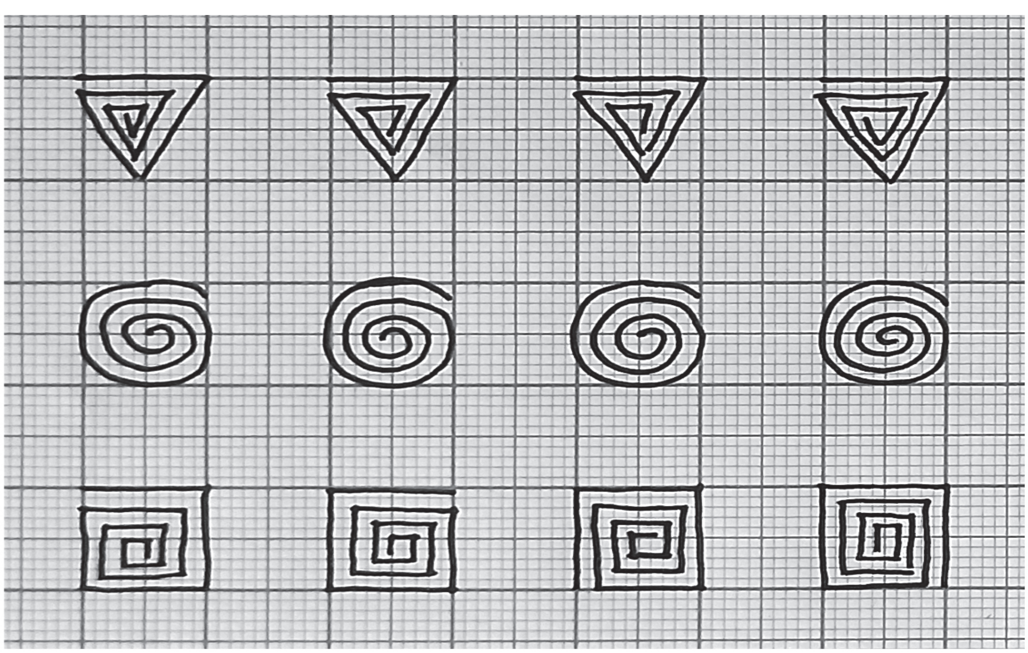

◆ ऊपर के अनुसार और कुछ आकारों का अभ्यास करवा लें।